Table of Contents

1. भारतेंदु हरिश्चंद्र का परिचय
2. हरिद्वार की यात्रा का वर्णन

भारतेंदु हरिश्चंद्र का परिचय

भारतेंदु हरिश्चंद्र हिंदी साहित्य के आधुनिक युग के जनक माने जाते हैं। उन्होंने कविता, नाटक, निबंध, यात्रा-वृत्तांत आदि अनेक विधाओं में लेखन किया। वे समाज सुधार, राष्ट्र प्रेम, अंग्रेजी शासन के विरोध और स्वाधीनता की भावना के लिए प्रसिद्ध हैं। भारतेंदु ने कई पत्रिकाएँ प्रकाशित कीं जैसे कविवचन सुधा, हरिश्चंद्र मैगजीन, हरिश्चंद्र चंद्रिका और बालाबोधिनी। उनकी प्रमुख कृतियों में सत्य हरिश्चंद्र, भारत-दुर्दशा, अंधेर नगरी और सरयूपार की यात्रा शामिल हैं।

- समाज सुधार और राष्ट्र प्रेम उनके लेखन के मुख्य विषय थे।
- उन्होंने हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- उनकी रचनाएँ लगभग 150 वर्ष पुरानी हिंदी भाषा में हैं।

भारतेंदु हरिश्चंद्र की यात्राएँ और उनके यात्रा-वृत्तांत भी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

मुख्य बिंदु

- हिंदी साहित्य के आधुनिक युग के जनक।
- कविता, नाटक, निबंध, यात्रा-वृत्तांत के लेखक।
- समाज सुधार, राष्ट्र प्रेम, अंग्रेजी शासन विरोध।
- प्रमुख पत्रिकाएँ: कविवचन सुधा, हरिश्चंद्र मैगजीन।
- प्रमुख कृतियाँ: सत्य हरिश्चंद्र, भारत-दुर्दशा, अंधेर नगरी।

पाठ्य प्रमाण

"'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल' का उद्घोष करने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कविता, नाटक, निबंध और यात्रा-वृत्तांत आदि अनेक विधाओं में लेखन कार्य किया।"

अभ्यास प्रश्न

- भारतेंदु हरिश्चंद्र को हिंदी साहित्य में क्यों महत्वपूर्ण माना जाता है?
- भारतेंदु की प्रमुख कृतियाँ कौन-कौन सी हैं?
- भारतेंदु हरिश्चंद्र की यात्राओं का उनके साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर कुंजी

- भारतेंदु हरिश्चंद्र को आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक माना जाता है क्योंकि उन्होंने हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- उनकी प्रमुख कृतियों में सत्य हरिश्चंद्र, भारत-दुर्दशा, अंधेर नगरी और सरयूपार की यात्रा शामिल हैं।
- यात्राओं से उन्हें प्रकृति, इतिहास, संस्कृति का अध्ययन करने में मदद मिली, जिससे उनके साहित्य में जीवन्तता आई।

शब्दावली

- उद्घोष: घोषणा
- कविवचन: कवियों की बातें
- स्वाधीनता: स्वतंत्रता
- साधु: तपस्वी
- तीर्थ: पवित्र स्थान

हरिद्वार की यात्रा का वर्णन

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 1871 में हरिद्वार की यात्रा की। उन्होंने इस यात्रा का वर्णन कविवचन सुधा पत्रिका के संपादक को लिखे पत्र में किया है। इस पत्र में हरिद्वार की प्राकृतिक सुंदरता, पर्वत, पक्षी, गंगा नदी, घाट, और वहाँ के लोगों का विस्तृत चित्रण है। उन्होंने बताया कि हरिद्वार की भूमि तीन ओर से हरे-भरे पर्वतों से घिरी हुई है और वहाँ की हवा, जल, और वातावरण अत्यंत शुद्ध और निर्मल है।

- हरिद्वार की प्राकृतिक सुंदरता और पवित्रता।
- गंगा नदी की दो धाराएँ: नील धारा और श्री गंगा।
- तीर्थ स्थल और वहाँ के धार्मिक महत्व।
- स्थानीय लोगों और दुकानदारों का व्यवहार।
- यात्रा के दौरान अनुभव और आध्यात्मिक आनंद।

मुख्य बिंदु

- हरिद्वार की हरी-भरी पर्वत श्रृंखला।
- गंगा नदी की शीतल और निर्मल धारा।
- तीर्थ स्थलों का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व।
- स्थानीय जीवन और साधुओं का वर्णन।
- यात्रा के दौरान आध्यात्मिक अनुभव।

पाठ्य प्रमाण

"मेरा तो चित्त वहाँ जाते ही ऐसा प्रसन्न और निर्मल हुआ कि वर्णन के बाहर है।"

"यह भूमि तीन ओर सुंदर हरे-हरे पर्वतों से घिरी है जिन पर्वतों पर अनेक प्रकार की वल्ली हरी-भरी सज्जनों के शुभ मनोरथों की भाँति फैलकर लहलहा रही है।"

अभ्यास प्रश्न

- भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हरिद्वार की यात्रा का वर्णन किस प्रकार किया है?
- हरिद्वार की प्राकृतिक विशेषताएँ क्या हैं?
- हरिद्वार की यात्रा से भारतेंदु को क्या आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त हुए?

उत्तर कुंजी

- भारतेंदु ने हरिद्वार की प्राकृतिक सुंदरता, पर्वत, गंगा नदी, और वहाँ के लोगों का विस्तृत वर्णन किया है।
- हरिद्वार तीन ओर हरे-भरे पर्वतों से घिरी हुई है, यहाँ की गंगा नदी शीतल और निर्मल है।

- यात्रा के दौरान उन्हें आध्यात्मिक शांति और आनंद की अनुभूति हुई।

शब्दावली

- पर्वत: पहाड़
- वल्ली: बेल, लता
- घाट: नदी के किनारे उतरने की जगह
- तीर्थ: पवित्र स्थान
- निर्मल: शुद्ध, साफ